राजस्थानी साहित्य के विकास के विभिन्न चरण एवं विशेषताएँ प्रमुख राजस्थानी साहित्यकार

एकता

सारांश

राजस्थान का इतिहास एवं सांस्कृतिक वैभव में सम्पूर्ण देश में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इस प्रदेश के संघर्षशील व्यक्तित्व के धनी व्यक्तियों द्वारा शताब्दियों से भारतीय संस्कृति, कला व साहित्य के उत्थान में अपना अक्षुण्ण योगदान दिया गया है। यहाँ के प्रमुख साहित्यकारों द्वारा अपनी कलात्मक रचनाओं के माध्यम से देश की सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखने की महती कार्य किया है। यहाँ का साहित्यिक गौरव अन्य प्रांतीय भाषा के साहित्य हेतु गौरान्वित है।

मुख्य शब्द – सांस्कृतिक वैभव, महत्त्वपूर्ण, अक्षुण्ण, कलात्मक, सांस्कृतिक– विरासत, गौरव, भारतीय संस्कृति इत्यादि।

प्रस्तावना

राजस्थानी साहित्य से हमारा अभिप्राय 'राजस्थान' नामक भू–भाग में बोली जाने वाली जन–भाषा के लिखित व मौखिक साहित्य से माना गया है। राजस्थानी साहित्य की सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में अपनी एक अलग छवि है। इस साहित्य की अपनी प्राचीन व अगाधता की गरिमा, प्रौढ़ता एवं जीवन्तम का सूचक है। इस साहित्य का जितना विशाल भंडार है उतना शायद ही किसी अन्य भाषा के साहित्य का है।

राजस्थानी साहित्य में राजस्थान के संघर्षमय जीवन व वीरता की झलक है इसके साथ–साथ देशप्रेम, गौरव, आजादी की प्रबल लालसा जीवन मूल्यों का भरपूर साहित्य, राजमहल के विलास वैभव के कथानक युद्ध विवरण, नारी सुलभ गुणों की रक्षा में प्राण न्यौछावर करती वीरांगनायें व रणभूमि में दिल दहलाने वाले उदम्य दृश्यों का भावमय वर्णन राजस्थानी की झलक को साहित्य के माध्यम से चित्रित करती है।

इस साहित्य के रचनाकारों ने अपने–अपने प्रिय नायकों के नाम को आधार बनाकर अपने ग्रंथों का नामकरण किया है। इन सभी ग्रंथों का केन्द्रीय भावन 'जननी जन्म भूमिश्च स्वांगदिपि गरीयसी' है। ये सभी ग्रंथ को देश प्रेम व मातृभूमि के प्रति समर्पण की प्रेरणा देते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इतिहास समाज का दर्पण कहा जाता है जिससे समाज काल, साहित्य को जाना जा सके। राजस्थान में साहित्य संस्कृत व प्राकृत भाषा में लिखा जान पड़ता है। राजस्थान की प्रमुख भाषा मरू भाषा है जिसका अध्ययन से पता चलता है कि इसे ही मरूवाणी तथा मारवाड़ी कहा जाता है। राजस्थानी भाषा के साहित्य में हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक काल का साहित्य माना जाता है। अध्ययन से ही यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी साहित्य की नींव में हमारा राजस्थानी साहित्य हैं वैदिक संस्कृत से विकसित होकर नागर अपभ्रंश ने राजस्थानी भाषा का रूप धारण किया। इसकी दो प्रमुख शैलियाँ रही डिंगल एवं पिंगल।

राजस्थानी साहित्य के विकास के विभिन्न चरण

राजस्थानी साहित्य से अभिप्राय राजस्थान प्रदेश में बाली जाने वाली जनभाषा व मौखिक साहित्य से है। डॉ. एल.पी. टैसीटोरी, सीताराम लालस, मोतीलाल मेनारिया जेसे अनेक प्रर्मुति विद्वानों राजस्थानी साहित्य को लिखा जिसे मुख्यतः चार कालों में विभाजित किया गया है–

(1) आदिकालीन राजस्थानी साहित्य–1460 ई. तक जो साहित्य लिखा उसे प्रारम्भिक साहित्य काल कहा गया। राजस्थानी साहित्य का विकास 8वीं सदी में संस्कृत व प्राकृत में व 10वीं सदी में अपभ्रंश में माना गया। प्रारम्भिक समय में उद्योतन सूरी कृत (कुवलयमाला) प्राकृत में व माघ द्वारा शिशुपालवध संस्कृत में लिखे गये। इस काल की प्रमुख कृतियों में–पृथ्वीराज रासो, नरपति नाल्ह, पद्मनाभ इस काल के प्रमुख रचनाकार माने गये।

(2) पूर्व मध्यकाल–1460 से 1700 ई. तक जो साहित्य रचनायें हुई वे पूर्व मध्यकाल साहित्य कहलाये। इसकाल की मुख्य कृति "ढोला मारू रा दूहा' और 'वेलि किसन रूकमणी री' रही। इस काल में श्रृंगार व भक्ति के साथ वीर पुरुषों की कीर्तिगाथा रचनाओं के मुख्य विषय रहे। इसी समय राम कृष्ण भक्ति काव्य धारा का विकास प्रारंभ हुआ। इसी समय

जाम्भोजी, जसनाथी, दादू चरणदासजी इत्यादि (निगुर्ण काव्य धारा के) व मीरा, पुष्टिमार्गीय संत कृष्ण पयहारी आदि संत (सगुण काव्य धारा) के साहित्य की रचना करने वाले हुये। इसी समय पृथ्वीराज राठौड़, नाभादास, केशवदास दुरसा आढ़ा इत्यादि प्रमुख रचनाकार हुये।

(3) उत्तर मध्यकाल–इस काल में 1700 से 19वीं सदी का साहित्य सृजन हुआ। इस काल में डिंगल व पिंगल भाषा में उच्च कोटि का साहित्य सृजन हुआ। इस समय कृष्ण भक्ति, वीरता, श्रृंगार व नीति प्रधान रचनायें अधिक हुई। मोतीलाल मेनारिया ने इस काल "राजस्थान साहित्य का स्वर्णकाल" कहा। इस काल के प्रमुख रचनाकार–जग्गाजी खिड़िया, वीरभाण, करणीदान, किरपाराम, बांकीदास, किसनाजी आढ़ा इत्यादि रहे। गवरी बाई भी इसी काल की प्रमुख कवयित्रि रही। इसे 'वांगड़ की मीरा' भी कहते हैं।

(4) आधुनिक काल–1857 ई. के बाद लिखे गये साहित्य को आधुनिक काल का साहित्य कहा जाता है। इस काल में साहित्य में राजनैतिक और सामाजिक चेतना के साथ ब्रिटिश शासन व सामन्तशाही जिनमें गांधीवादी रचनायें भी है। इस समय साहित्य में चेतना की शुरूआत सूर्यमल्ल मिसण द्वारा की गई। प्रमुख साहित्यकार–केसरी सिंह बारहठ, कन्हैयालाल सेठिया, सत्यप्रकाश जोशी, लक्ष्मी कुमार चूड़ावत जैसे साहित्यकार अग्रणी रहे।

राजस्थानी साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ

- राजस्थानी साहित्य गद्य–पद्य की विशिष्ट लोकपरक शैलियों यथा ख्यात, वात, वेलि, वचनिका, दवादैत आदि रूपों को रचा हैं।
- राजस्थानी साहित्य में वीर–रस, श्रृंगार–रस का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।
- यहाँ के कवि कलम व तलवार के धनी रहे हैं उनमें विरोधाभास रासो का अद्भुत समन्वय इस साहित्य की प्रमुख विशेषता रही।
- जीवन आदर्शों व जीवन मूल्यों में राजस्थानी साहित्य में दिव्य प्रेम, स्वामिभक्ति, स्वाभिमान, शरणागत रक्षा व नारी रक्षा, नारी सौन्दर्य को पर्याप्त महत्व दिया गया।

साहित्यावलोकन

राजस्थान के प्रमुख साहित्य व उनके रचनाकारों की निम्नलिखित कृतियाँ हैं–

(1) पृथ्वीराज रासो–कवि चन्दवरदाई

अजमेर के अंतिम चौहान सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय के जीवन चरित्र व युद्धों का वर्णन है। यह पिंगल में रचित वीर रस का महाकाव्य माना गया।

(2) खुमाण रासो–दलपत विजय

पिंगल भाषा के श्रृंगार रस से परिपूर्ण ग्रन्थ के ढोला व मारवणी के प्रेमाख्यान का वर्णन है।

(3) ढ़ोला–मारू रा दूहा–कवि उल्लोल

डिंगल भाषा के श्रृंगार रस से परिपूर्ण ग्रन्थ के ढ़ोला व मारवणी के प्रेमाख्यान का वर्णन है।

(4) पृथ्वीराज विजय–जयानक

संस्कृत भाषा के इस काव्य ग्रन्थ में पृथ्वीराज चौहान के वंशक्रम की उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।

(5) वेलि किसन रूक्मणि री–पृथ्वीराज राठौड़

- इन्होंने 'पीथल' नाम से साहित्य रचना की।
- इस ग्रन्थ में श्रीकृष्ण व रूक्मणि के विवाह की कथा का वर्णन है।
- दुरसा आढ़ा ने इस ग्रंथ को पांचवां वेद व 19वीं पुराण कहा।

(6) अचलदास री खींची री वचनिका–शिवदास गाडण

1430–35 के मध्य रचित इस डिंगल ग्रंथ में मांडू के सुल्तान होशंगशाह एवं गागरोन के शासक अचलदास खींची के मध्य युद्ध का वर्णन मिलता है।

अंत टिप्पणी–

- राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति : एक सर्वेक्षण एच.डी. सिंह एवं चित्रा राव, पृ. 202, जयपुर, 2016–17.

संदर्भ

1. मेनारिया, डॉ. मोतीलाल, राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ. 2
2. डिंगल के ऐतिहासिक प्रबंध काव्य, डॉ. शक्तिदान कविया, पृ.सं. 26.
3. सीताराम, लालसः राजस्थानी भाषा–साहित्य एवं व्याकरण, पृ. 84.
4. शर्मा, दशरथ, नाहटा, अगरचन्दः अभिनन्दन ग्रंथ, पृ.–232.
5. ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द; उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग–1, पृ.–381–382.

6. दुरसा आढा, विरूद छिहतरी, महाराणा प्रताप स्मृति ग्रंथ में प्रकाशित, पृ. 79.
7. शर्मा, गोवर्द्धन, राजस्थानी साहित्य के ज्योतिपुंज, पृ. 37, 38
8. पालीवाल, देवीलाल, प्राचीन डिंगल काव्य में महाराणा प्रताप, पृ. 112, 113.